Shiva Panchakshari Mantra Mahima

शिव पंचाक्षरी मंत्र साधना एवं महिमा

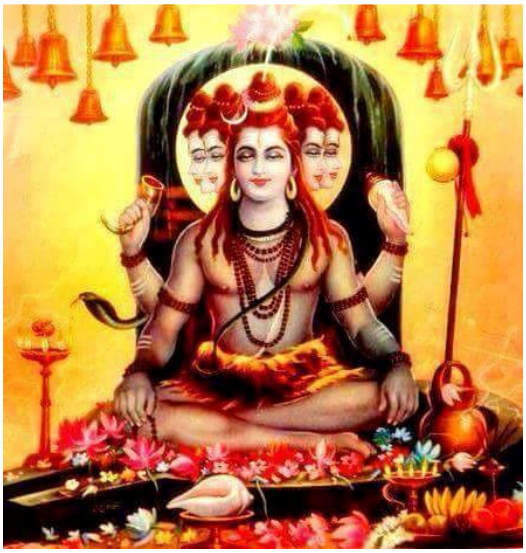

Shri Raj Verma ji

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

विनियोग- अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, ईशानो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवायेति कीलकम्, चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ वामदेवर्षये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। ईशानदेवतायै नमः हृदये। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। नमः शक्तये नमः पादयोः। शिवायेति कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास एवं हृदयादिन्यासः-

ॐ ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

नं ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

मं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

शिं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

वां ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

यं ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट।

ध्यानमंत्र–

बन्धूक सन्निभं देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्।

त्रिशूलधारिणं देवं चारुहासं सुनिर्मलम्।।

कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम्।

उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत्सोमेश्वर सदा।।

पंचाक्षरीमंत्र– 'नमः शिवाय।'

षड्क्षरीमंत्र– 'ॐ नमः शिवाय।'

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

जपस्थान- शिवालय, गंगातट, पर्वत, समुद्रतट, तीर्थस्थल, तपोवन, निर्जनवन, गुरुगृह, भूगर्भ, एकलिंग, श्मशान, भैरवमन्दिर, मनोहर पुष्प वाटिका तथा एकान्त गृहमन्दिर- इनमें से जो स्थान साधना के लिये उपलब्ध, अनुकूल एवं एकान्त हो अथवा जहां साधना में मन लगे वही स्थान श्रेष्ठ है। शिव की सन्निधि में सूर्य, गुरु, दीपक, गौ अथवा जल के समक्ष जपकर्म श्रेष्ठ माना गया है।

पंचाक्षरी मंत्र माहात्म्य, संक्षिप्त

जप विधि एवं काम्य प्रयोग-

भगवान् शिव इस महामंत्र के विषय में कहते हैं- हे देवि! सौ करोड़ वर्षों में भी पंचाक्षरमंत्र का माहात्म्य कहा नहीं जा सकता है। यह सब मंत्रों का राजा है। अतः इसे संक्षेप में सुनिये। प्रलय के उपस्थित होने पर जब समस्त जगत् नष्ट होकर प्रकृति में लीन होकर प्रलय को प्राप्त हो जाता है, उस समय सभी वेद तथा शास्त्र इसी पंचाक्षरमंत्र में स्थित रहते हैं, मेरी शक्ति से अनुपालित होने के कारण वे नष्ट नहीं होते हैं। यह मंत्र अल्प

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

अक्षरों वाला, महान अर्थों वाला, वेदों का सार, मुक्तिप्रद, आज्ञासिद्ध एवं शिवस्वरूप है।

हे शुभे! अब मैं इस मंत्र को ग्रहण करने की विधि बताऊंगा, जिसके बिना यह निष्फल हो जाता है। आज्ञाहीन, क्रियाहीन, श्रद्धाहीन, ध्यानहीन, आज्ञप्त तथा दक्षिणाहीन मंत्र जपे जाने पर सदा निष्फल होता है। शिष्य को चाहिये कि मंत्र के वास्तविक अर्थ के ज्ञाता, ज्ञानसम्पन्न तथा सद्‌गुणों से युक्त गुरु के पास जाकर भावशुद्धि से युक्त हो मन-वचन-शरीर तथा धन से उन्हें प्रयत्नपूर्वक संतुष्ट करे और श्रद्धापूर्वक आचार्य की सर्वदा पूजा करे। वैभव रहने पर रत्न, क्षेत्र, गृह, आभूषण, गौ, वस्त्र तथा विविध धान्य गुरु को भक्तिपूर्वक प्रदान करे। यदि वह अपनी सिद्धि चाहता है तो धन की कृपणता न करे। इसके बाद सेवक आदि सहित स्वयं को भी गुरु को समर्पित कर देना चाहिये। अपना हित चाहने वाले को तीनों संध्याओं में गुरु की पूजा करनी चाहिये। जो गुरु हैं, वे शिव कहे गये हैं और जो शिव हैं, वे ही गुरु कहे गये हैं। जैसे स्वर्ण, अग्नि के सम्पर्क से अपने मैल का त्याग कर देता है, वैसे ही मनुष्य ज्ञानी गुरु के सम्पर्क से पाप का त्याग करता है। इसके बाद गुरु शुभयोग में शिष्य पर

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

अनुग्रह करके उसे शिवज्ञान प्रदान करे तथा स्वयं मंत्र उच्चारण करते हुए शिष्य से तीन बार मंत्र का उच्चारण कराकर मंत्रप्रदाता आचार्य बोले- तुम्हारा कल्याण हो, शुभ हो, कुशल हो, प्रिय हो। इस प्रकार गुरु से श्रेष्ठमंत्र प्राप्त कर साधक इसका पुरश्चरण करे। हे वरानने! जो सदाचार का पालन करते हैं, वे देवत्व तथा ऋषित्व प्राप्त करते हैं, अन्यथा नहीं।

पार्वतीजी के साथ बैठे हुए जगत्गुरु महादेवजी ने ब्रह्मा और विष्णु को भी इस मंत्र का उपदेश दिया था। मंत्रतंत्र में बतायी हुई विधि के पालनपूर्वक तीन बार मंत्र का उच्चारण करके भगवान् शिव ने उन दोनों शिष्यों को मंत्र की दीक्षा दी थी। फिर उन शिष्यों ने गुरुदक्षिणा के रूप में अपने आपको ही शिवजी के समर्पित कर दिया और दोनों हाथ जोड़, खड़े होकर जगत्पिता महादेव का भक्तिपूर्वक स्तवन किया था।

काम्यप्रयोग- भगवान् शिव पार्वती से कहते हैं- जो शुद्धचित्त होकर पर्वत पर चढ़कर आलस्यरहित होकर एक लाख बार मंत्र का जप करता है अथवा किसी महानदी के तट पर दो लाख बार जप करता है, वह दीर्घायु प्राप्त करता है। दूर्वांकर, तिल, वाणी, गुरुच

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

और घुटिका- इनका दस हजार होम आयु की वृद्धि करता है। शनिवार के दिन अपने दोनों हाथों से पीपल का स्पर्श करते हुए 108 या 1008 जप करने से अकालमृत्यु का निवारण होता है। सूर्य की ओर मुख करके एकाग्रचित्त होकर एक लाख जप करने से और अर्क की समिधाओं से प्रतिदिन एक सौ आठ होम करने वाला साधक सर्व रोगों से मुक्त होता है। प्रतिदिन एक सौ आठ बार जप करके सूर्य के समक्ष जल पीने से शीघ्र ही उदर सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिलती है। ग्यारह बार मंत्र से अभिमंत्रित करके अन्न तथा अन्य भक्ष्य पदार्थ ग्रहण करने से विष भी अमृत हो जाता है। नदी के जल से भरे हुए सुन्दर घड़े को स्पर्श करते हुए दस हजार या इससे अधिक जप करने से सभी रोगों की चिकित्सा हो जाती है। ग्रह तथा नक्षत्र के पीड़ा देने पर दस हजार जप करके आठ हजार आहुति देने से मनुष्य ग्रहपीड़ा से मुक्त हो जाता है। हाथियों, घोड़ो तथा गोजाति के पशुओं में रोग उत्पन्न होने पर विधिवत् महीने भर पूजन करके दस हजार आहुति होम करने से उन पशुओं की शान्ति तथा उनकी वृद्धि होती है। उपद्रव, अभिचारिक कर्म तथा शत्रुबाधा में पलाश की समिधाओं से दस हजार होम करना चाहिये। विद्वेषण के लिये बहेड़े की समिधाओं से

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

होम करना चाहिये। जो साधक जितेन्द्रिय होकर शिवज्ञान को प्रकाशित करने वाले इस मंत्र का पांच लाख जप करता है, वह शिव का सान्निध्य प्राप्त करता है तथा वह मनुष्य पांचों वायु पर विजय प्राप्त कर लेता है। पुनः पांच लाख जप करने वाला मनुष्य पांचों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है। पुनः पांच लाख जप करने वाला मनुष्य पांचों विषयों पर विजय प्राप्त कर लेता है। पुनः पांच लाख जप करने से साधक पंचभूतो पर विजय प्राप्त कर लेता है। पच्चीस लाख मंत्र जप से मनुष्य पच्चीस तत्त्वों पर विजय प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्य आलस्यरहित होकर मध्यरात्रि में वातशून्य तथा ध्वनिरहित पवित्र स्थान में एक लाख जप करता है, वह शिव-शक्ति के दर्शन कर लेता है। जो पवित्र मन से भक्तियुक्त एक, दो, तीन अथवा चार करोड़ जप करता है, वह क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तथा महेश्वर का पद प्राप्त करता है। पांच करोड़ जप करके मनुष्य साक्षात् मेरे समान हो जाता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

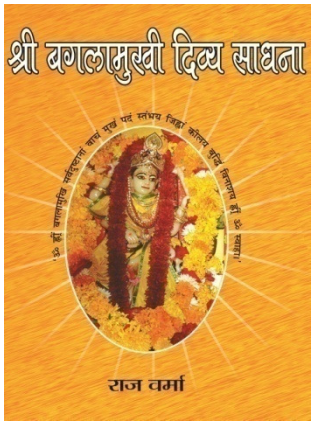

Shri Raj Verma ji
Email- mahakalshakti@gmail.com
Mob +91-9897507933,+91-7500292413